सत्संग परमसंत हुजूर
पुष्कर दयाल जी महाराज
(गुडगांव, सैक्टर–5, (दूसरा भाग)
दिनांक 31 जनवरी 2016)

!!राधा–स्वामी!!

आप इस संसार में हो, आपको लगता है कि हम आजाद पंक्षी हैं, जो मन में आए वो कर सकते हैं। ये सबसे बडी गलतफहमी है, आपके मन में। आप आजाद पक्षी नही हो, ये संसार एक बहुत बडा जेल है, और इस संसार का जेलर काल है। काल समय को बोलते हैं, काल मौत को भी बोलते हैं। तो इस संसार में हम अपनी मर्जी से कुछ भी नही कर सकते हैं। ये बात आप समझ लो अच्छी तरह से, ये संसार एक जेल है और इस जेल में हम अपनी मर्जी से कुछ नही कर सकते हैं। क्या आप अपनी मर्जी से जन्म ले सकते हैं? कोई चाहता है मैं किसी सेठ के घर में जन्म ले लूँ, लेकिन उसका जन्म झुग्गी–झोपडी में हो जाता है, अपनी मर्जी से जन्म ले नही सकता वो। कोई कहता है मैं अपनी मर्जी से मरूँ, मेरा सारा परिवार मेरे सामने हो, मैं सबसे आर्शीवाद लेकर मरूँ। ऐसा हो सकता है? बाहर सडक पर जा रहा था, एक ट्रक आ गया ओर कुचल दिया। क्या मृत्यु हमारे हाथ में है?

घनश्यामदास बिरला जो आधे हिन्दुस्तान का मालिक था। उसका कितना बडा परिवार था? अगर सारा परिवार इकट्ठा करने लगे तो एक बहुत बडा मैदान चाहिए। उसकी मृत्यु कैसे हुई? वो लंदन चला गया था Conference Attand करने, 5Star होटल में बैठा था। सुबह उठकर Walk को निकल गया। सैर करते–2 रास्ते में Heart Attack हो गया और वहीं मर गया। एक घण्टे बाद पता चला कि ये घनश्यामदास बिरला है। क्या मृत्यु हमारे हाथ में है? ना जन्म हमारे हाथ में है, और ना मृत्यु हमारे हाथ में है। फिर जन्म और मृत्यु के बीच में जो फासला है, वो किस अधिकार से हमारे हाथ में है? वो भी हमारे हाथ में नही है। हम चाहते हैं कि हमारे लडका हो जाए, लेकिन लडकियों की लाईन लग जाती है। हम चाहते हैं कि हमारी लडकी की शादी किसी राजकुमार के साथ हो जाए, लेकिन किसी शराबी के साथ हो जाती है, और वो सारी जिंदगी पीटता रहता है। है हमारे हाथ में कुछ? किस अधिकार से कहते हैं कि आप आजाद पंक्षी हैं। आप कहते हैं कि हमारा बेटा कलैक्टर हो जाए, लेकिन मुंशी पार्टी में एक कर्लक बन कर रह जाता है। तो आप किस अधिकार से कहते हैं कि ये संसार हमारा है और हम इसमें आजाद पंक्षी बैठे हैं। हम इस संसार में कैदी हैं, We are prisoners. हमारे हाथ में कुछ नही है, जो भी यहाँ का जेलर चाहे, वही होगा, और यहाँ का जेलर है काल। हम अपनी मर्जी से कुछ नही कर सकते हैं, हम अपनी मर्जी से क्यों नही कुछ कर सकते हैं? कभी सोचा है आपने इसके बारे में? जब हमारे घर में कोई बच्चा पैदा होता है, तो हम उसका समय नोट करते हैं, फिर हम किसी ज्योतिषी या पंण्डित के पास जाते हैं और उसको बोलते हैं इसकी जन्मपत्री बना दो। उस जन्म पत्री को लेकर हम किसी Astrology या ज्योतिषी के पास जाते हैं। उसको बोलते हैं इसे पढो, और वो इस जन्मपत्री को पढकर कहता है–ये बहुत अच्छा लडका बनेगा, यें बहुत पढाई करेगा, इसकी शादी बहुत अच्छी जगह होगी, इसकी नौकरी बहुत बढिया होगी, ये बहुत तरक्की करेगा। तो उसने कैसे बताया? कि तुम्हारा बेटा कलैक्टर बनेगा? क्योंकि जब हम संसार में जन्म लेते हैं, उसी टाईम हमारी जन्म पत्री बन जाती है। हमारी जन्म पत्री वो (मालिक) बनाता है। और वो हमारी जन्म पत्री का मसाला कहाँ से लेकर आता है? हमारे पिछले प्रारब्ध कर्मों से, हमारे पिछले जन्मों से, जो हमने किया है। अच्छे कर्म किए हैं, बुरे कर्म किए हैं, वो सारे कर्म इकटठे करके हमारी जन्म पत्री बनाता है। और उस जन्मपत्री में हमारे एक–2

मिनट, एक–2 सैकिंण्ड़ का हिसाब होता है। हमारा ज्योतिषी तो मोटा–मोटा बताएगा, ये होगा, वो होगा, शादी कब होगी? कितना जीयेगा?, लेकिन जिसने हमारी जन्म पत्री बनाई, उसने हमारे जन्म का एक–2 सैकिंण्ड का हिसाब लिखकर देता है, कब क्या होगा? वो कहाँ से बनाता है? वो हमारे पिछले जन्मों का सारा रिकार्ड अपने सामने रखता है, इसने क्या किया? इसने ये बुरा काम किया, तो इसका यहाँ Accident हो जाएगा। इसने यहाँ एक धर्मशाला बनवाई, इसका बेटा अच्छा बनेगा, इसको यहाँ सुख मिलेगा। तो सारा सामने रखकर हमारी जन्मपत्री बनाता है। आप क्या समझते हो कि आप यहाँ पर इकट्ठे हो गए और हम आपको प्रवचन दे रहे हैं, क्या ये अचानक हो गया? ये अचानक नही हुआ, ये पहले से ही तय था।

एक बार होशियारपुर में, मैं सत्संग दे रहा था। तो मैंने वहाँ यही बात कही कि हम जो यहाँ पर मिले हैं, ये अचानक नही हुआ, ये पहले से ही तय था। वहाँ पर लोग मेरे Against हो गए, ये आप क्या कह रहे हो जी, ये कैसे हो सकता है? आप गलत कह रहे हैं। मैंने कहा– अगर मैं गलत कह रहा हूँ तो किसी विद्वान को बुलाओ और उससे पूछो। अगर वो कहता है कि मेरी बात गलत है, तो मैं मान लूँगा कि मैं गलत हूँ और फिर मैं कभी होशियार पुर आऊँगा ही नही। तो वहाँ एक विद्वान थे, उनका नाम था डॉ0 पाराशर। तो उनको फोन किया गया, उन्होने कहा अभी मैं Class ले रहा हूँ, वो संस्कृत के प्रोफेसर हैं, तो उन्होने कहा मैं शाम को आ जाऊँगा। शाम को हम डॉ0 पाराशर से मिले और उनके सामने ये सवाल रखा गया कि महाराज जी ने ये बात बताई, लेकिन हम तो सहमत नही हैं। डॉ0 पाराशर ने थोडी देर सोचा, फिर कहा– महाराज जी सच कह रहे हैं। ये घटना पहले ही निश्चित हो गई है, और इसको आज घटना था। फिर उन्होने महाभारत का उदाहरण दे दिया। जब भगवान कृष्ण अर्जुन को गीता सुना रहे थे, तो अर्जुन कह रहा था–मैं नही लडूँगा। ये मेरा ताऊ है, ये मेरा चाचा है, ये मेरा गुरू है, मैं कैसे मारूँगा इनको? मैं नही मारता इनको। धनुष छोड दिया उसने। तो भगवान कृष्ण ने कहा– ये तो समझेगा नही, इसको दूसरे तरीके से समझाना होगा। तो कृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट स्वरूप दिखाया, अपना मुँह खोला, देख मेरे मुँह में। तो अर्जुन क्या देखता है उसके मुँह में? सारी कौरव सेना मरी पडी है, ऊँट, खच्चर, हाथी मरे पडे हैं। सारे उसके रिश्तेदार, दुर्योधन, भीष्मपितामह, सब मरे पडे हैं। तो कृष्ण अर्जुन को कहता है– देखो ये पहले से ही निश्चित है, इन सबको मरना है, और तेरे हाथ से ही मरना है, ये भी तय है। तब जाकर अर्जुन कहता है– भगवान आप अपने रूप में आ जाओ, मैं इस विराट रूप से डर गया हूँ। मेरा मोह नष्ट हो गया है। अब मुझे कोई मोह नही है कि ये मेरा ताऊ है, ये मेरा चाचा है, ये मेरा गुरू है। अब मैं लडने को तैयार हूँ। तो ये उदाहरण डॉ0 पाराशर ने दे दिया। देखो ये पहले से तय था कि कौरवों को मरना है। फिर उन्होने दूसरा उदाहरण दे दिया। जब गांधारी ने भगवान कृष्ण को श्राप दे दिया, जैसे तेने मेरे 100 बेटों को मारा है, वैसे ही तेरा खान दान भी नष्ट हो जाएगा। तो भगवान कृष्ण कहते हैं– माता क्यों अपना श्राप बेकार करती हो, ये तो पहले से ही निश्चित है, उन सबको मरना है। भगवान कृष्ण को मालूम था कि मेरा सारा खान–दान नष्ट हो जाएगा। क्यों? क्योंकि वो पहले से ही निश्चित था। अब आपकी भी जन्म पत्री बनी है, आप सबकी जन्म पत्री बनी है, और वो जन्म पत्री मालिक के पास है। उसमें हरेक सैकिंण्ड का, हरेक मिनट का हिसाब है, आपको क्या करना है? कहाँ जाना है? सब हिसाब है। तो आज आपकी जन्मपत्री में ये लिखा है कि आपको यहाँ पर आकर मेरा सत्संग सुनना है। ये पहले से ही निश्चित था। तो ये कैसे बनता है? जन्मपत्री बनाने बाला हमारे प्रारब्ध कर्मों को हमारे संचित कर्मों को जोडकर हमारा भाग्य बनाता है इस जन्म का। जो हमारे प्रारब्ध कर्म हैं, वो भी आ जाएँगे और जो हमारे संचित कर्म हैं वो भी लाईन में लग जाएँगें। और First come first, एक–2 करके हमें अच्छे कर्मों का अच्छा फल मिलता है और बुरे कर्मों का बुरा फल मिलता है। हम कर्म कैसे बनाते हैं? कर्म बनता है तीन तरीके से– मन, वचन और कर्म से। मन से कर्म बनता है जब हम किसी का बुरा सोचते हैं, वो हमारा कर्म

बन गया। हम सोचते हैं कि मैंने उसके बारे में मन से बुरा सोचा, उसे क्या मालूम? लेकिन ऐसा नही है, इस गलतफहमी में कभी मत रहना। हमारे अंदर जो बैठा है, वो सब कुछ देख रहा है, सब सुन रहा है और सब रिर्कोड कर रहा है, कि हम क्या सोचते हैं मन में। अगर हम अपने में किसी का बुरा चाहते हैं तो ये हमारा कर्म बनता है। इसलिए हमारे गुरू जी कहते थे कि किसी से नफरत मत करो। चाहे कोई तुम्हारा दुश्मन ही है। दुश्मन अपना कर्म बना रहा है, उसे बनाने दो। जब तुम उससे नफरत करते हो, तुम क्यों अपना कर्म बनाओ। देखो मन से कैसे कर्म बनता है, मैं आपको एक साधारण सी मिसाल देता हूँ। हमारे पास एक बहुत सुंदर छोटा बच्चा है। हम उसे सुंदर कपडे पहनाकर किसी पार्टी में ले जाते हैं। वहाँ सब देखते हैं, अरे! कितना सुंदर बच्चा है। जब शाम को बच्चा घर पर आता है तो उसे बुखार चढ जाता है। ये मन से कर्म बन गया। ऐसा क्यों होता है? हमारे मन में इतनी शक्ति क्यों है? हम जो मन से कर्म बनाते हैं। क्योंकि हमारा मन उसी मालिक के मन का अंश है। उस मालिक के मन में इतनी शक्ति है कि उसने एक कल्पना की और ये सारी कायनात खडी कर दी। अरबों–खरबों चाँद सितारे, गैलेक्सी हैं। इस कायनात के बनने का और कोई तरीका नही है। उसने संकल्प किया और ये कायनात बन गई। अभी तक Scientist उलझे हुए हैं, उनको पता ही नही ये कायनात कैसे बनी? लेकिन हमें पता है, हमारे गुरूओ, ऋषि–मुनियों को पता है, ये कायनात कैसे बन गई। मालिक ने अपने मन से कल्पनी की, एक बिन्दू बनाया और उस बिन्दू में विस्फोट हो गया। जिसको Scientist बोलते हैं– Bing-Bang Theory, उस बिन्दू में विसफोट हो गया, और उस बिन्दू में से अरबों–खरबों चाँद–सितारे, गैलेक्सी बन गईं और इस कायनात का कोई अंत नही है। ये सब कैसे बन गया? उसने मन से कल्पना की और इतनी बडी कायनात खडी कर दी, और उसी मालिक के मन का अंश हमारा भी मन है, और अगर हम अपने मन की शक्ति को बाहर निकालें, मन की शक्ति को खोज लें, तो हम भी एक कायनात खडी कर सकते हैं। हमारा मन उसी मालिक के मन का अंश है, और हम अपने मन से जो भी इच्छाएँ करते हैं, वो सारी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। लेंकिन इसमें एक बहुत बडा लेकिन है। क्योंकि हमारी इच्छाएँ इतनी सारी हैं कि उनकी Line लग जाती हैं। एक जन्म में पूरी नही होती, पता नही कितने जन्म लगते हैं उनको पूरा होने में। क्योंकि First come First, लेकिन ईच्छा नही करनी चाहिए। जब हम मन में कोई इच्छा करते हैं तो मालिक का दोष निकालते हैं। अरे! उसने हमारा भाग्य बनाया, हमारे पिछले कर्मों का जो भी लेखा–जोका था, उसके हिसाब से हमारा जन्म बन गया। अब उसके अलावा कोई इच्छा करते हैं, तो हम उसकी गलती निकालते हैं। हम कहते हैं हमारे पास दूसरी कार होनी चाहिए, एक ही कार है हमारे पास। तो जब हमने ईच्छा की दूसरी गाडी की, तो हम अपने भाग्य से बाहर गए और उसका दोष निकाला। हमारे भाग्य में दो गाडी क्यों नही हैं? हमने उसका दोष निकाला, और जब हम उसका दोष निकालते हैं, तो हमारा कर्म बन गया। हमें उस कर्म को भुगतना पडता है। और वो भी लाईन में लग जाता है, First come First.

राजा दशरथ ने 10,000 साल तपस्या कीं। विष्णु भगवान प्रगट हुए और कहा– बोलो जी क्या चाहिए आपको? दशरथ ने कहा– मुझे आप जैसा बेटा चाहिए। विष्णु भगवान मुस्कुराए, ठीक है अब आपने माँग ही लिया है, तो अब मुझे करना ही पडेगा। तो विष्णु जी राम के अवतार में दशरथ का बेटा बनकर आ गए। परिणाम क्या हुआ? परिणाम ये हुआ, कि राम को वनवास जाना पडा और दशरथ की उसी टाईम मृत्यु हो जाती है। दशरथ की क्यों मृत्यु हो गई? क्योंकि उसने इच्छा की थी, और जब हम इच्छा करते हैं, तो इच्छा पूरी हो जाती है, लेकिन उसका दण्ड भी साथ मिल जाता है। इसलिए अपने भाग्य में हमेशा संतुष्ट रहो और कभी किसी चीज की इच्छा मत करो। जो तुम्हारे भाग्य में है वो तुमको मिलेगा ही मिलेगा, उसे ना कोई कम कर सकता है और ना कोई ज्यादा कर सकता है। भाग्य से ज्यादा तुम माँगोगे तो तुम्हारा कर्म बन गया, और उसको तुमको भुगतना पडेगा। और साथ के साथ तुम दुखी भी हो जाओगे। क्यों? अगर तुम्हारी कोई इच्छा पूरी

नही हुई तो दुखी, और By Chance पूरी हो गई, तो दूसरी इच्छा हाजिर। और जब दूसरी इच्छा पूरी नही हुई तो फिर से दुखी। इसलिए कभी कोई इच्छा मत करो, और अपने भाग्य में संतुष्ट रहो।

!! राधा–स्वामी !!